राष्ट्रीय आंदोलन के वृहत संतर्भ में भारत छोड़ो आंदोलन का योगदान

शोध सारांश

भारत छोड़ो आंदोलन की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह थी कि ज्ञानसाधन में स्वयं की आंदोलनकारिणी पुरुषोत्तम की मानसिकता से मुक्त कर स्वतंत्रता की वेतन का प्रावास कर सकिया, भारत छोड़ो आंदोलन से भारत में ब्रिटिश शासन के स्वाधीन होने तथा उसके अपराधों के लिए भारतीय जनसमुदाय का प्रभावित धारणा के गहरा आकाश लगा। भारत छोड़ो आंदोलन की एक अन्य विरोधी देश के विभिन्न क्षेत्रों में ब्रिटिश शासन / प्रशासन का हटाकर समानार्थी सरकार की स्वतंत्रता का प्रयास, यथाशक्ति सरकारी महत्त्वी की दमनकारी प्रभावी से अन्य सरकारी रूपों के लोकतंत्र आदिक दिन नहीं दिखाया। लेकिन इन्हें भारतीय जनसमुदाय को महत्त्वदायक मजबूती प्रदान। उपयुक्त शोध पत्र भारत छोड़ो आंदोलन की प्रकृति, परिस्थितियों एवं अन्य कारकियतों की विश्लेषण करने के एक संक्षिप्त प्रयास है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्रह की प्रकृति भारतीय संक्षमक्षक के बहुत अनुभवी हैं। इस संघर्ष में उद्योगी, वाणिज्य, दस्तावेज, समाजकार, गृहस्थ, एवं क्रांतिकारी समर्थक विवादियों का सहभागिता है, साथ ही जनजातियों, महिलाओं, किसानों, मजबूती, बुद्धिजीवियों सह सभी धर्मों के आन्दोलनों को इस्तेमाल करने में सक्षम है। इस संघर्ष के विभिन्न मार्गों पर स्वतंत्रता नेतृत्व एवं जनता का एक ही लक्ष्य था। भारत की आज़ादी। 1857 के रास्त्रीय विजयद ने जिसका हम प्रथम प्रताप संप्रभु नंदलील के नाम से जानते हैं उन्हें सर्वोच्च अवसर के लिए इन्हें भाग दिया है। लेकिन 1947 में आज़ादी प्राप्त तक 90 वर्षों के कालखंड को भारतीय स्वतंत्रता संग्रह कहा जाता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्रह में भारत छोड़ो आंदोलन की पृथ्वीगु, प्रकृति एवं परिस्थिति विद्विष्ट महत्त्व है। यह आंदोलन विशेष युद्ध के माय पुष्टित, प्रभावित हुआ। इसमें 1939 में राजनीति आत्मा में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नेतृत्व को विद्यमान ने विभिन्न प्रकार भारतीय संग्रहीय अपानाधीनता को युद्ध में झोंक दिया। यह बड़ा ही विद्वेषनपूर्ण है कि पूर्ण शैतंत्रिक विशेष उपयोगी शासन ने सर्वजनशील युद्ध (नागरिकीय एवं जनतादी तमामों) को साधारणता के लिए बड़ा उपयोग करने पर नहीं आता। ब्रिटिश राष्ट्रीय विद्वेषित रहें, जिसका उपयोग हुआ।

**उपयुक्त शोध पत्र**

भारत छोड़ो आंदोलन की प्रकृति, परिस्थितियों एवं अन्य कारकियतों की विश्लेषण करने का एक संक्षिप्त प्रयास है।

*एन्साइक्लिक विशेष संघर्ष* महात्मा गांधी नेतृत्व में प्रायोगिक समस्त विषयों को भारतीय जनता की स्वतंत्रता मान्यता किया। ऐसी संघर्ष भारत की तनावशील जनता के लिए अत्यंत सही और संवेदनशील था।

उपयुक्त परिस्थितियों में क्रांतिकारी व्यापार करने का नेतृत्व अवश्य भारतीय क्रांतिकारी विकल्प का चुनाव करता है।